

## चीन के साथ भारत का संबंध

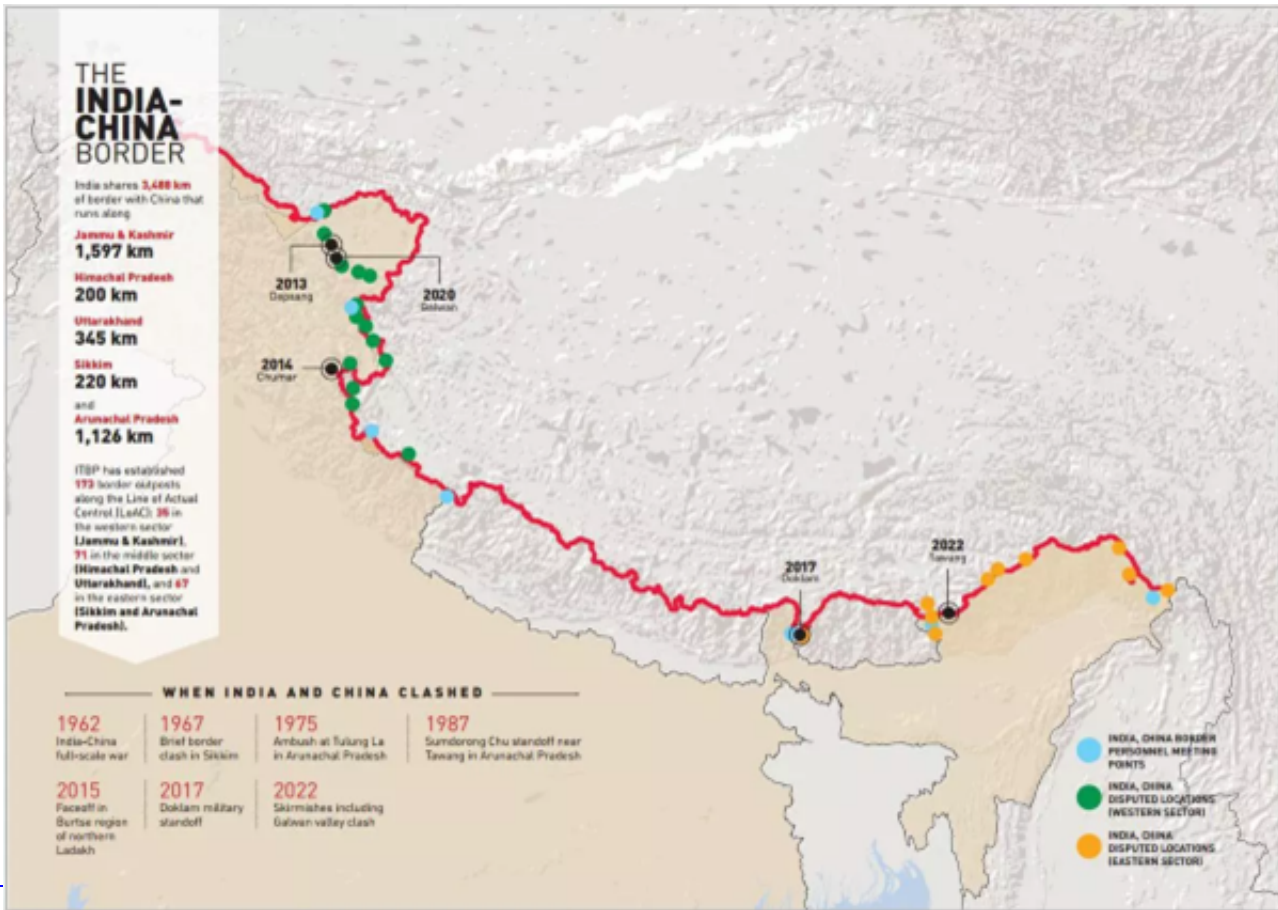
यह एडिटरियल 19/04/2023 को 'द हट्टि' में प्रकाशित "A message for the planners in dealing with the Dragon" लेख पर आधारित है। इसमें भारत के लिये चीन की भू-राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाओं के नहितार्थ और भारत के लिये अपनी सीमा पर किसी भी स्फूर्त गतिविधि के लिये तैयार रहने की आवश्यकता के संबंध में चर्चा की गई है।

### संदर्भ

[भारत-चीन संबंधों](#) में हाल के घटनाक्रमों ने दोनों देशों के बीच भविष्य में संघर्ष की संभावना के बारे में चिंताओं की वृद्धि की है। 'बिना युद्ध जीत' (Winning Without Fighting) के सन जू (Sun Tzu) के दर्शन के उपयोग पर प्रश्न उठाया गया है तो दूसरी ओर कई अन्य लोगों का अनुमान है कि चीन युद्ध की तैयारी कर रहा है।

- भारत और चीन के तनावपूर्ण संबंधों को हाल के चीनी उकसावों से बढ़ावा मिला है, जिसमें अरुणाचल प्रदेश में स्थानों के लिये नामों का आवंटन, भारतीय मीडियाकरमियों को वीजा देने से इनकार करना और युद्ध की तैयारी पर राष्ट्रपति के वक्तव्य आदि शामिल हैं। इन घटनाओं ने चीन के इरादों के बारे में चिंता उत्पन्न की है और भारत को किसी भी स्थिति के लिये तैयार रहने की आवश्यकता है।
- इस संदर्भ में, भारत की रक्षा तैयारियों की संवीक्षा की जा रही है, जहाँ रक्षा संबंधी संसदीय स्थायी समिति ने सशस्त्र बलों के तत्काल आधुनिकीकरण की आवश्यकता पर बल दिया है।

### [भारत-चीन संघर्ष के प्रमुख कारण](#)



- **ववाद:** भारत-चीन संबंध लगभग 75 वर्षों से संघर्ष और सहयोग के विभिन्न चक्रों से होकर गुजरे हैं।
  - हाल में संघर्ष की सबसे गंभीर घटनाएँ **वर्ष 2020 में लद्दाख की गलवान घाटी** में और वर्ष 2022 में अरुणाचल प्रदेश के तवांग में देखने को मिलीं।
  - सीमा—वास्तविक नियंत्रण रेखा (Line of Actual Control- LAC) के दोनों ओर के पर्यवेक्षक इस बात से सहमत हैं कि वर्ष 2013 के बाद से गंभीर सैन्य टकरावों की संख्या में वृद्धि हुई है।
- **स्पष्ट सीमांकन का अभाव:** भारत और चीन के बीच की सीमा अपने पूरे भाग में स्पष्ट रूप से सीमांकित नहीं है और कुछ हिस्सों में वास्तविक नियंत्रण रेखा पर कोई पारस्परिक सहमति भी नहीं है।
  - LAC वर्ष 1962 के भारत-चीन युद्ध के बाद असततत्व में आया।
  - भारत-चीन सीमा को तीन सेक्टरों/क्षेत्रों में बाँटा गया है।
    - **पश्चिमी क्षेत्र:** लद्दाख
    - **मध्य क्षेत्र:** हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड
    - **पूर्वी क्षेत्र:** अरुणाचल प्रदेश और सिककिम
- सोवियत संघ/रूस और संयुक्त राज्य अमेरिका सहित एक-दूसरे के मुख्य शत्रुओं के साथ साझेदारी ने उन्हें रणनीतिक भागीदार बनने और रणनीतिक मामलों पर सहयोग करने से अवरुद्ध रखा है।
- चीन और भारत के बीच बढ़ते शक्ति अंतराल (जहाँ चीन की जीडीपी भारत की तुलना में पाँच गुना अधिक है) ने भारत के लिये चीन के समक्ष झुकने का संकेत दिए बिना किसी भी सामंजस्य के निर्माण को कठिन बना दिया है।
- बुनियादी ढाँचे के निर्माण ने, विशेष रूप से तिब्बत में, एक ऐसी सुरक्षा दुवधा को जन्म दिया है जिसमें सैन्य संबंध एक ऐसे सर्पिल या पेंचदार स्थिति में चले जाते हैं जहाँ एक पक्ष या दोनों पक्ष युद्ध के लिये प्रेरित हो सकते हैं।

## सीमा ववाद समाधान तंत्र क्या रहा है?

- **सीमा शांति और अमन समझौता (Border Peace and Tranquility Agreement):**
  - इस पर वर्ष 1993 में हस्ताक्षर किये गए थे, जिसमें बल प्रयोग के त्याग, LAC की मान्यता और बातचीत के माध्यम से सीमा मुद्दे के समाधान का आह्वान किया गया था।
- **LAC पर सैन्य क्षेत्र में विश्वास निर्माण उपायों पर समझौता (The Agreement on Confidence Building Measures in the Military Field along the LAC):**
  - इस पर वर्ष 1996 में हस्ताक्षर किये गए थे, जिसमें LAC पर असहमतियों को हल करने के लिये गैर-आक्रामकता, बड़े सैन्य आवागमन की पूर्व सूचना देने और मानचित्रों के आदान-प्रदान करने की प्रतिज्ञा की गई थी।
- **सीमा रक्षा सहयोग समझौता (Border Defence Co-operation Agreement):**

